ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-8* October- 2020
Innovation The Research Concept

समकालीन हिंदी कहानी के सामाजिक सरोकार

Social Concerns of Contemporary Hindi Story

Paper Submission: 10/10/2020, Date of Acceptance: 25/10/2020, Date of Publication: 26/10/2020

अशोक कुमार मौर्य
शोधार्थी,
हिंदी विभाग,
नागपुर यूनिवर्सिटी, नागपुर,
महाराष्ट्र, भारत

सारांश

समकालीन हिंदी कथा साहित्य में "कहानी" विधा का महत्वपूर्ण स्थान है। कहानी की संवेदना भारतीय समाज से सृजित होती है।भारतीय साहित्य की संवेदनाओं में निहित समाज दर्शन की आधारशिला समाज का आम आदमी निर्मित करता है। जिसमें समाज का मध्य वर्ग, कृषक मजदूर, स्त्री, दलित, आदिवासी तथा अन्य हाशिए का समाज अस्तित्ववादी अप्रवासी अल्पसंख्यक आदि की महत्वपूर्ण भूमिका है। समाज में व्याप्त विचारधारा जिसमें सांप्रदायिकता भूमंडलीकरण बाजारवाद उपभोक्तावाद आदि ने साहित्य संवेदना को नए मूल्यों से अभिसिंचित किया है। समकालीन साहित्य के पैरोकार और पाठक वर्ग इन्हीं मूल्यों एवं मुद्दों को उद्घाटित करते हैं। यद्यपि कि कथा साहित्य में कहानी का मूल उद्देश्य समाज की हर समस्या और परिवर्तन पर प्रश्न खड़ा कर नए मूल्यों को उद्घाटित करना रहा है।

"Kahaani" genre occupies an important place in contemporary Hindi fiction. The sensations of the story are created from the Indian society. The foundation of the social philosophy rooted in the sensibilities of Indian literature forms the common man of society. In which the middle class of the society, agricultural laborers, women, Dalits, tribal and other marginalized society, the non-existent immigrant minority, etc. have an important role. The ideology prevailing in the society in which communalism, globalization, marketism, consumerism, etc. has ingrained literature sentiment with new values. Advocates and readers of contemporary literature reveal these values and issues. However, in fiction, the basic purpose of the story has been to raise questions on every problem and change of society and to reveal new values.

मुख्य शब्द : समकालीनता, कहानी, कथा साहित्य, समाज, विमर्श, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, भूमंडलीकरण, उपभोक्तावाद, सांप्रदायिकता, मध्य वर्ग एवं हासियें का समाज।

Contemporaryness, Story, Fiction, Society, Discourse, Social, Political, Economic, Globalization, Consumerism, Communalism, Middle Class And Marginalized Society.

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के इतिहास में समकालीनता की अवधारणा 1970 ईस्वी के उपरांत की विचारधारा है। यद्यपि की समकालीनता को समय के ताले में बाधा नहीं जा सकता है। समकालीन साहित्य में कथा साहित्य का महत्व अधिक है जिसमें कहानी विधा का महत्वपूर्ण स्थान है। आलोचना और विचारधारा को समाज के परिप्रेक्ष में साहित्य को रखकर जीवन के मूल्यों को समझने की कला और विधा के रूप में कहानी विधा अग्रणी है। हिंदी साहित्य में प्रतिष्ठित कथाकार और पाश्चात्य साहित्यकार जैसे कि रूसी साहित्यकार मैक्सिम गोर्की ने भी कहानी को मानव जीवन का अभिन्न अंग माना है। इसलिए साहित्य के इतिहास में कहानी की वैचारिकता एवं इतिहास के साथ–साथ उस में अभिव्यक्त मानव जीवन के यथार्थ को समझने पर बल दिया जाता है। प्रेमचंद्र पूर्व, प्रेमचंद्र कालीन एवं उसके पश्चात नई कहानी, समकालीन कहानी तथा विभिन्न कहानी आंदोलनों का मूल प्रतिपाद्य जीवन का यथार्थ, मनुष्य का मन एवं समाज में उसकी उपस्थिति आदि विषय रहा है। कहानी में अभिव्यक्त जीवन और समाज के साथ उसके यथार्थ संबंध को हम समकालीन परिप्रेक्ष में किस रूप में देखते हैं और उसमें मनुष्य के लिए स्थान की परिकल्पना क्या है इसकी खोज करते हैं। कथा साहित्य के इतिहास में समकालीन कहानी का पठन–पाठन इसी प्रकार का अवसर प्रदान करता है।

समकालीन कहानी पर विचार करते हुए हम पाते हैं कि इस समय के कहानीकारों ने समकालीन समय,समाज परिवर्तन एवं विकास की प्रक्रियाओं को ध्यान में रखते हुए कहानी संसार की रचना हुई है। समकालीन दौर में कहानियों की मूल संवेदना की रचना एवं सृजनात्मकता जटिल और विविधता पूर्ण है वैचारिक धरातल पर मूल्यांकन करना हो तो समकालीन कहानी की दुनिया में बिखराव है, वह मुद्दों एवं मानदंडों की सीमा से परे है इसलिए यहां इतिहास, सामाजिक विमर्श, वैचारिकता का द्वंद, राजनीतिक संघर्ष व्यक्तिगत अनुभव के साथ–साथ सामूहिक मतवाद एवं उसकी विचारधारा एक साथ दिखाई देती हैं। समकालीनता एवं उसकी विचारधारा को समझने के लिए इतिहास, समाजशास्त्र, राजनीतिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, धर्म शास्त्र, मनोविज्ञान आदि के साथ–साथ मानव स्वभाव के सर्जनात्मक पहलू की समझ होनी चाहिए। समकालीन हिंदी कहानी की दुनिया में विविधता इतनी है कि पाठक समझ नहीं पाते हैं कि हम कहानी का अध्ययन कर रहे हैं या सामाजिक ताने–बाने का समाज काद्य वर्गीय चरित्र सामाजिक संघर्षों में स्त्री दलित एवं शोषित का इतिहास सामाजिक राजनीतिक परिवर्तन एवं विकास, उपभोक्तावाद, बाजारवाद, भूमंडलीकरण आदि सामाजिक मूल्य समकालीन कहानी की मूल वैचारिकता है। इन्हीं वैचारिक द्वंद्वों के बीच समकालीन कहानीकार अपने आपको समाज के साथ जोड़ने की कोशिश करते हैं। जैसे कि उदय प्रकाश की 'क्षितिज' संजीव की 'अपराध' पंकज बिष्ट की 'बच्चे गवाह नहीं हो सकते' चित्रा मुद्गल की 'लकड़बग्घा' ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'सलाम' अखिलेश की 'चिट्ठी' आदि कहानियां समकालीन समय समाज राजनीति के यथार्थ तथा बाजारवाद के माया जाल में फंसे मनुष्य के अंतर्मन की बेचौनी और अंतर्द्वंद को उद्घाटित करती है।

समकालीन कहानी में तत्कालीन समाज के जीवन तथा सोच में आए परिवर्तनों को उद्घाटित किया गया है। समकालीन कहानी में कला के साथ–साथ समाज की समझ भी है,सर्जनात्मक भाषा के अलावा सामाजिक समुदायों के साथ जोड़कर सार्वजनिक चरित्रों के सृजन क्षमता का विस्तार पूर्ण वर्णन भी है। समकालीन कहानीकारों में भीष्म साहनी, ज्ञानरंजन, दूधनाथ सिंह, रमेश बक्षी, काशीनाथ सिंह, रामकुमार, गंगा प्रसाद विमल,कृष्णा सोबती, रविंद्र कालिया, जगदंबा प्रसाद दीक्षित, शैलेश मटियानी, कृष्ण बलदेव वैद्य, ममता कालिया,राजी सेठ,मधुकर सिंह, सतीश जमाली, विजय मोहन सिंह, उदय प्रकाश, संजीव, पंकज बिष्ट आदि प्रमुख हैं। जिन्होंने अपने कहानियों में समकालीन यथार्थ को चित्रित किया है इन लोगों ने समकालीन कहानी को नई कहानी एवं साठोत्तरी कहानी के मध्यवर्गीय चरित्रों, बौद्धिकता, वैचारिकता, सांकेतिकता के साथ ही पात्रों की निष्क्रियता तथा किसी भी प्रकार के मूल्य की स्थापना की प्रक्रिया से बाहर निकाला और रचना तथा विचार की धरातल में यथार्थ और आम आदमी के महत्व को उद्घाटित किया।

समकालीन कहानी के वैचारिक धरातल के निर्माण में हिंदी के पूर्ववर्ती कहानीकार और उनकी कहानियों की संवेदनाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। यद्यपि हम जानते हैं कि प्रेमचंद एवं उनके समकालीन कथाकारों एवं कथा साहित्य को समझने के लिए महात्मा गांधी के आंदोलनों के साथ–साथ भगत सिंह के क्रांतिकारी एवं अंबेडकर के दलित आंदोलनों के अलावा समाज सुधार आंदोलन के एक कालखंड में निर्मित रचनात्मक यथार्थ को भी समझना पड़ेगा। उसी प्रकार समकालीन कथा साहित्य को समझने के लिए दलित आंदोलन, नक्सलवाद ,आर्थिक उदारीकरण, भूमंडलीकरण, सांप्रदायिक दंगे, किसान एवं मजदूर संगठनों का आंदोलन एवं उभरती हुई उपभोक्तावादी संस्कृति को भी समझना होगा। सन 1960 ईस्वी के बाद कहानी आंदोलनों का मुख्य प्रतिपाद्य सामाजिक यथार्थ का चित्रण कहीं न कहीं सामाजिक आंदोलनों के प्रभाव के कारण ही है। नई कहानी की मूल संवेदना जहां मध्यवर्ग की परिधि में है वही सचेतन, सहज, सक्रीय, समांतर और जनवादी कहानी आंदोलनों के बीच आम आदमी की पीड़ा को चित्रित करते हैं। इन्हीं सामाजिक आंदोलनों के प्रभाव में किसान मजदूर स्त्री दलित आदिवासी और हाशिए के लोग कहानी के केंद्र में आते हैंद्य कहानी की रचना प्रक्रिया तथा मूल संवेदना समकालीन समय में वृहत्तर संदर्भ को समाहित किए हुए हैं, जहां पूर्वर्ती कहानीकार कहानियों में कथानक एवं कथावस्तु एकांगी विषय को उद्घाटित करती है वही समकालीन कहानी एक ही कहानी में विविध विषयों को एक साथ गुम्फित करके उद्घाटित करती है। यही कारण है कि समकालीन कथा साहित्य में अस्मितावादी विमर्श मुख्य कथानक का रूप लेते हैं सामाजिक विमर्श ,साहित्यिक विमर्श के रूप में पाठकों के बीच अध्ययनका विषय बनता है।

भारतीय समाज में पाश्चात्य जगत की जीवन शैली नए मूल्यों का समावेश कराती है। सार्वभौमिक विचारधारा के साथ जहां भारतीय समाज विश्व संस्कृति के साथ जुड़ता है वही समकालीन भारतीय साहित्य इस परिवर्तन को उद्घाटित करने के लिए आगे आता है। आर्थिक उदारीकरण भूमंडलीकरण उपभोक्तावाद ने भारतीय समाज व्यवस्था को जड़ से हिला दिया है इन्हीं परिवर्तनों को कहानीकारों ने अपने कथा का मूल प्रतिपाद्य बना लिया और जबरदस्त कहानियों की रचना की है इन कहानीकारों में उदय प्रकाश ने सांप्रदायिकता को लेकर 'और अंत में प्रार्थना' नामक कहानी लिखी, अरुण प्रकाश ने 'मैया एक्सप्रेस' मोहम्मद आरिफ ने 'तार' संजय खाती ने 'पिंटी का साबुन' उपभोक्तावाद का पर लिखी कहानी है। मनोज चोपड़ा ने विकास को लेकर 'बुडान' अखिलेश ने उपभोक्तावाद पर 'जलडमरूमध्य' ओमां शर्मा ने भूमंडलीकरण पर 'भविष्यदृष्टा' कैलाश वनवासी ने ग्रामीण जीवन के यथार्थ पर 'बाजार में रामधन' अवधेश प्रीत ने नक्सलवाद पर 'नृशंस'चंदन पांडे ने उदारीकरण पर 'भूलना' आदि समकालीन विषयों को लेकर कहानियां लिखी।

समकालीन कहानी के मध्य में मध्यवर्ग के समानांतर आम आदमी और हाशिए का समाज अपनी उपस्थिति दर्ज करते हैं। सृजनात्मकता एवं वैचारिकता के बीच वंचित समाज की प्रबल दावेदारी कहानी एवं

कहानीकारों के बीच प्राथमिक विषय बन गए नई कहानी एवं साठोत्तरी कहानीकार जो समकालीन कहानी लिखने लगे, मध्यवर्गीय नजरिए से समकालीन समय और समाज को देखने का प्रयास कियाद्य राजेंद्र यादव, विष्णु साहनी, कमलेश्वर, गंगा प्रसाद विमल, शेखर जोशी, ज्ञानरंजन, मन्नू भंडारी ,रविंद्र कालिया ,ममता कालिया,मुद्राराक्षस, गोविंद मिश्र, विद्यासागर नौटियाल, शैलेश मटियानी, रामदरश मिश्र, काशीनाथ सिंह, दूधनाथ सिंह, कामतानाथ,आदि कथाकारों ने मध्यवर्गीय जीवन के पक्के अनुभवों को समकालीन सामाजिक राजनीतिक आर्थिक स्थानीय एवं विचारधारात्मक आंदोलनों से जोड़ते हुए उन्हें आम आदमी के सवालों से जोड़ा। समकालीन कहानी में गांव एवं शहरों में मुख्यधारा के अंदर और बाहर सार्थक जीवन के लिए संघर्षरत किसानों एवं मजदूरों के जीवन के यथार्थ का चित्रण है।भूख, ऋणग्रस्तता, सामंती समाज द्वारा शोषन दमन जैसी समस्याओं को केंद्र में रखकर कहानीकारों ने कृषक मजदूर समाज द्वारा किए जा रहे प्रतिरोध और संघर्ष को उनके जीवन के यथार्थ रूप में चित्रण है। समकालीन हिंदी कहानी के केंद्र में अस्मितावादी विमर्श के पैरोकार भारतीय समाज की 'स्त्री संवेदना' को मानते है। आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली स्त्री समाज को सामाजिक आर्थिक राजनीतिक न्याय दिलाने वाली कथावस्तु समकालीन कहानी का प्रतिपाद्य विषय है। रचनात्मकता और वैचारिकता के साथ स्त्री समाज की उपस्थिति समकालीन साहित्य को नया मूल्य प्रदान करती है। विभिन्न स्त्री संगठनों एवं प्रगतिशील आंदोलनों के साथ जुड़कर स्त्री समाज बौद्धिकता के साथ हस्तक्षेप किया और अपनी नई पहचान बनाई। 'श्रृंखला की कड़ियां' 1942 ईस्वी में निबंध संग्रह में महादेवी वर्मा ने स्त्री की सामाजिक अस्मिता को महत्त्व देते हुए उस स्त्री शक्ति को नई पहचान एवं प्राणवेग करने की बात की है। समकालीन कहानी के स्त्री रचनाकारों में मंजुल भगत, मन्नू भंडारी, चित्रा मुद्गल, कृ ष्णा सोबती, कृष्णा अग्निहोत्री, मेहरुन्निसा परवेज अनामिका, मृदुला गर्ग. मैत्रेई पुष्पा. अर्चना वर्मा, रमणिका गुप्ता आदि प्रमुख है।स्त्री कहानीकारों ने स्त्री की सामाजिक आर्थिक राजनीतिक स्वतंत्रता एवं समानता के साथ आत्मनिर्भरता, आत्मनिर्भरता वाली विचारधारा को प्रश्रय दिया, साथ ही पितृसत्तात्मक समाज एवं परंपरावादी रूढ़िगत विचार से मुक्ति दिलाने की संभावना को तलाशने की कोशिश की है, जिससे साहित्य में स्त्री लेखन को नई दिशा मिली। 1970 ईस्वी के बाद से स्त्री लेखन स्वतंत्रता समानता एवं सामाजिक प्रतिनिधित्व की ओर अग्रसर है।

समकालीन हिंदी कहानी में वंचित समाज को भी नई दृष्टि प्रदान करने वाली संवेदना निहित है। भारतीय दलित समाज को जो हमेशा से शोषण एवं लाचारी से ग्रस्त रहा, समकालीन दौर के साहित्य की धारा में बहने लगेद्य इसके पीछे समाज सुधार आंदोलनों का प्रमुख योगदान रहा खासकर ज्योतिबा फुले और अंबेडकर के आंदोलनों का प्रभाव दिखता है। बीसवीं सदी के अंत में अस्मितावादी विचारधारा एवं विमर्श को साहित्य में प्रमुखता दी गई इसके पीछे कहीं न कहीं उत्तर आधुनिक विचारधारा का भी सहयोग है जो कि आयातित है। महाराष्ट्र में मराठी साहित्य एवं पूरे भारत के क्षेत्रीय भाषाओं सहित हिंदी साहित्य में दलित विमर्श एक सामाजिक राजनीतिक आंदोलन रूप ले लिया है। साहित्य पर इसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, जयप्रकाश कर्दम ,सुशीला टाक भोरे, सूर्यनारायण रणसुभे , दयानंद बटोही, श्योराज सिंह बेचौन, धर्मवीर भारती, सूरजपाल चौहान,कंवल भारती, कुसुम वियोगी आदि दलित साहित्यकार हिंदी साहित्य में दलित विमर्श को अपनी रचनाओं के माध्यम से आगे बढ़ाया है। इनके साहित्य में दलित समाज के उत्पीड़न संघर्ष शोषण प्रतिरोध बहिष्कार आदि संवेदनाओं को समाहित किया गया है। राजनीतिक संवैधानिक अधिकार मिलने के बावजूद दलित पिछड़े समाज की भारतीय समाज में नाजुक स्थिति दलित साहित्य में यथार्थ देखने को मिलता है।

समकालीन हिंदी कहानी में 'हाशिए के समाज'की उपस्थिति इस बात का ाेतक है कि समकालीन साहित्य समाज के हर वर्ग की संवेदना को उद्घाटित करता है 1970 ईस्वी के बाद सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में परिवर्तन देखने को मिलता है। इसके पीछे कहीं न कहीं राजनीति के हथकंडे कार्यशील थेद्य इन मुद्दों का प्रभाव सामान्य जनमानस पर पड़ता है परिणामतरू साहित्य अछूता नहीं रह सकता था। आदिवासी समाज, बहिष्कृत समाज, विस्थापित समाज, असंगठित मजदूर आदि मुख्य धारा से वंचित थे। विस्थापन शोषण दमन का शिकार यह वंचित समाज अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत था। इन मुद्दों पर विचार करें तो हम पाते हंस कि समकालीन हिंदी कहानी मुख्यधारा से कटे समाज की संवेदना की कहानी है। भालचंद्र जोशी की कहानी 'पहाड़ों पर रात' संजीव की 'प्रेत मुक्ति' 'पांव तले की दूब' अरुण प्रकाश की 'बेला' 'एक्का लौट रही है' हरेंद्र की कहानियां आदिवासी समाज की मुश्किलों आकांक्षाओं उनके जीवन संघर्षों को उद्घाटित कर रही हैं। समकालीन कहानी संघर्षरत कार्यशील समाज की ट्रेजडी को उद्घाटित करती है। कमलेश्वर का समानांतर कहानी आंदोलन इन्हीं प्रश्नों को लेकर साहित्य को समृद्ध करता है। जनवादी कहानी आंदोलन शोषित और बेसहारा लोगों के आर्थिक एवं सामाजिक शोषण की कहानी रचता है। समकालीन कहानी समाज को साहित्य के साथ गहरे स्तर तक अवगुम्फित करती है।

समकालीन कहानी की कथावस्तु 1984 ईस्वी के सांप्रदायिक दंगे के बाद नया रूप धारण करती है साहित्य की गद्य एवं पद्य दोनों विधाओं में सांप्रदायिक रंग यहीं से चढ़ता है। यद्यपि यह समय राजनीतिक उथल–पुथल का है इसका प्रभाव भारतीय हिंदी साहित्य पर भी पड़ता है। समकालीन हिंदी कहानी में सांप्रदायिकता से ग्रस्त कथा का प्रचलन समकालीन सामाजिक राजनीतिक धार्मिक यथार्थ को चित्रित करता है। शिवमूर्ति की 'त्रिशूल' अवधेश प्रीत की 'बशारत मंजिल' समोल अहमद की कहानी 'सिंगारदान' सांप्रदायिक हिंसा एवं भय को चित्रित करती है। सांप्रदायिकता धार्मिक उन्माद का कारण है जो समाज को वैचारिक मतभेद का शिकार बनाती है और यही मतभेद सांप्रदायिकता को बढ़ावा देता है।

20 वीं सदी का अंतिम दशक, वैश्विक एकता को बढ़ावा देने वाला दशक माना जाता है। समकालीन हिंदी कहानी में आर्थिक उदारीकरण भूमंडलीकरण एवं उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रभाव देखा जा सकता है। साहित्य की संवेदना समाज से सृजित होती है इसलिए भारतीय हिंदी साहित्य इससे अछूता कैसे रह सकता है। हिंदी कहानीकारों ने इस वैश्विक विचारधाराओं का आकलन किया और उसके सामाजिक प्रभाव का मूल्यांकन अपने कहानियों के माध्यम से किया उदय प्रकाश की कहानी 'पाल गोमरा के स्कूटर' पंकज बिष्ट की कहानी 'बच्चे गवाह नहीं हो सकते' आदि कहानियां बाजारवाद, नई आर्थिक व्यवस्था उपभोक्तावाद और भूमंडलीकरण के प्रभाव को उजागर करती है।

उद्देश्य

समकालीन कहानी के केंद्र में स्त्री, दलितय वंचित–शोषित वर्ग, आम आदमी, मजदूर, असंगठित मजदूर, मध्यवर्गीय समाज एवं अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करने वाला समाज है द्य समकालीन समाज को प्रभावित करने वाली विचारधाराओं में सांप्रदायिकता दलित विमर्श, स्त्री विमर्श आदिवासी विमर्श, भूमंडलीकरण, बाजारवाद, उपभोक्तावाद, आर्थिक उदारीकरण एवं हासियें के समाज के साथ ट्रांसजेंडर समाज कहानी के केंद्र में है द्यप्रस्तुत शोध आलेख में समकालीन हिंदी कहानी की मूल संवेदना में निहित इन्ही सामाजिक विमर्शो को उद्घाटित करने की कोशिश की गयी है ।

निष्कर्ष

समकालीन हिंदी कहानी की शुरुआत 1970 ईस्वी के पश्चात होती है। विभिन्न सामाजिक राजनीतिक परिवर्तनों से गुजरते हुए समाज के निचले पायदान तक पहुंचती है। समकालीन कहानी का इतिहास और स्वरूप प्रगतिशील सामाजिक वैचारिक निर्मितियों से परिपूर्ण है। समकालीन हिंदी कहानी की मूल संवेदना संकुचित न रहकर असीमित विस्तार को ग्रहण करती है। वैश्विक साहित्य एवं साहित्यकार इन मुद्दों को प्रमुखता से उठाते हैं। समकालीन कहानी के केंद्र में स्त्री, दलितय वंचित–शोषित वर्ग, आम आदमी, मजदूर, असंगठित मजदूर, मध्यवर्गीय समाज एवं अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करने वाला समाज है। समकालीन समाज को प्रभावित करने वाली विचारधाराओं में सांप्रदायिकता दलित विमर्श, स्त्री विमर्श आदिवासी विमर्श, भूमंडलीकरण, बाजारवाद, उपभोक्तावाद, आर्थिक उदारीकरण एवं हासियें के समाज के साथ ट्रांसजेंडर समाज कहानी के केंद्र में है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *मधुरेश, सिलसिला (समकालीन कहानी की पहचान), प्रकाशन संस्थान, दिल्ली, 1979*
2. *विश्वनाथ त्रिपाठी, कुछ कहानियां, कुछ विचार, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 1998*
3. *मधुरेश, हिंदी कहानी का विकास*
4. *मधुरेशः हिंदी कहानी, अस्मिता की तलाश, आधार प्रकाशन, पंचकूला, 2005*
5. *पुष्पपाल सिंह, समकालीन कहानी*
6. *रवींद्र कालिया (सं.) वर्तमान साहित्य, कहानी महाविशेषांक, अप्रैल और मई 1991 (दो भाग) (सं.) सेवक राम यात्री, विभूतिनारायण राय, गाजियाबाद*
7. *गंगा प्रसाद विमल, समकालीन कहानी का रचना विधान, सुषमा पुस्तकालय, दिल्ली, 1967*
8. *परमानन्द श्रीवास्तवरू समकालीन हिंदी आलोचना, साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली*
9. *शम्भु गुप्त, कहानी समकालीन चुनौतियाँ, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, २०१५*